

रविवार 8 जून, 2025

विषय — ईश्वर ही एकमात्र कारण और निर्माता है

स्वर्ण पाठ: प्रकाशित वाक्य 1 : 8

"प्रभु परमेश्वर वह जो है, और जो था, और जो आने वाला है; जो सर्वशक्तिमान है: यह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमेगा हूँ॥"

उत्तरदायी अध्ययन: यशायाह 45 : 5, 6, 8, 9, 12, 18, 22

- 5 मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूंगा,
- 6 जिस से उदयाचल से ले कर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं है।
- 8 हे आकाश, ऊपर से धर्म बरसा, आकाशमण्डल से धर्म की वर्षा हो; पृथ्वी खुले कि उद्धार उत्पन्न हो; और धर्म भी उसके संग उगाए; मैं यहोवा ही ने उसे उत्पन्न किया है॥
- 9 हाय उस पर जो अपने रचने वाले से झगड़ता है! वह तो मिट्टी के ठीकरों में से एक ठीकरा ही है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहेगी, तू यह क्या करता है? क्या कारीगर का बनाया हुआ कार्य उसके विषय कहेगा कि उसके हाथ नहीं है?
- 12 मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है।
- 18 क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है; उसी ने पृथ्वी को रचा और बनाया, उसी ने उसको स्थिर भी किया; उसने उसे सुनसान रहने के लिये नहीं परन्तु बसने के लिये उसे रचा है। वही यों कहता है, मैं यहोवा हूँ, मेरे सिवा दूसरा और कोई नहीं है।
- 22 हे पृथ्वी के दूर दूर के देश के रहने वालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूँ और दूसरा कोई नहीं है।

पाठ उपदेश

बाइबल

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1. उत्पत्ति 1 : 1, 26, 31 (से 1st.)

- ¹ आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
- ²⁶ फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
- ³¹ तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. निर्गमन 3 : 1-8 (से ;), 10-12 (से ;), 13, 14, 17 (से मिस्र)

- ¹ मूसा अपने ससुर यित्रो नाम मिद्यान के याजक की भेड़-बकरियोंको चराता था; और वह उन्हें जंगल की परली ओर होरेब नाम परमेश्वर के पर्वत के पास ले गया।
- ² और परमेश्वर के दूत ने एक कटीली फाड़ी के बीच आग की लौ में उसको दर्शन दिया; और उस ने दृष्टि उठाकर देखा कि फाड़ी जल रही है, पर भस्म नहीं होती।
- ³ तब मूसा ने सोचा, कि मैं उधर फिरके इस बड़े अचम्भे को देखूंगा, कि वह फाड़ी क्यों नहीं जल जाती।
- ⁴ जब यहोवा ने देखा कि मूसा देखने को मुड़ा चला आता है, तब परमेश्वर ने फाड़ी के बीच से उसको पुकारा, कि हे मूसा, हे मूसा। मूसा ने कहा, क्या आज्ञा।
- ⁵ उस ने कहा इधर पास मत आ, और अपने पांवोंसे जूतियोंको उतार दे, क्योंकि जिस स्थान पर तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है।
- ⁶ फिर उस ने कहा, मैं तेरे पिता का परमेश्वर, और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं। तब मूसा ने जो परमेश्वर की ओर निहारने से डरता था अपना मुंह ढांप लिया।
- ⁷ फिर यहोवा ने कहा, मैं ने अपक्की प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं उनके दुःख को निश्चय देखा है, और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम करानेवालोंके कारण होती है उसको भी मैं ने सुना है, और उनकी पीड़ा पर मैं ने चिन्त लगाया है।
- ⁸ इसलिये अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियोंके वश से छुड़ाऊं, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में जिस में दूध और मधु की धारा बहती है।
- ¹⁰ इसलिये आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूं कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।
- ¹¹ तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, मैं कौन हूं जो फिरौन के पास जाऊं, और इस्राएलियोंको मिस्र से निकाल ले आऊं?
- ¹² उस ने कहा, निश्चय मैं तेरे संग रहूंगा।

- 13 मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूँ, कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उनको क्या बताऊँ?
- 14 परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं जो हूँ सो हूँ। फिर उस ने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।
- 17 और मैं ने ठान लिया है कि तुम को मिस्र के दुखों में...

3. निर्गमन 14 : 1, 2, 4 (से 1st ;), 5, 8 (ओर वह) (से:), 10, 13, 21-23, 26, 27, 30, 31

- 1 यहोवा ने मूसा से कहा,
- 2 इस्राएलियों को आज्ञा दे, कि वे लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच पीहहीरोत के सम्मुख, बालसपोन के साम्हने अपने डेरे खड़े करें, उसी के साम्हने समुद्र के तट पर डेरे खड़े करें।
- 4 तब मैं फिरौन के मन को कठोर कर दूंगा, और वह उनका पीछा करेगा, तब फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा मेरी महिमा होगी; और मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। और उन्होंने वैसा ही किया।
- 5 जब मिस्र के राजा को यह समाचार मिला कि वे लोग भाग गए, तब फिरौन और उसके कर्मचारियों का मन उनके विरुद्ध पलट गया, और वे कहने लगे, हम ने यह क्या किया, कि इस्राएलियों को अपनी सेवकाई से छुटकारा देकर जाने दिया?
- 7 उसने छः सौ अच्छे से अच्छे रथ वरन मिस्र के सब रथ लिए और उन सभी पर सरदार बैठाए।
- 8 ... सो उसने इस्राएलियों का पीछा किया।
- 10 जब फिरौन निकट आया, तब इस्राएलियों ने आंखे उठा कर क्या देखा, कि मिस्री हमारा पीछा किए चले आ रहे हैं; और इस्राएली अत्यन्त डर गए, और चिल्लाकर यहोवा की दोहाई दी।
- 13 मूसा ने लोगों से कहा, डरो मत, खड़े खड़े वह उद्धार का काम देखो, जो यहोवा आज तुम्हारे लिये करेगा; क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो, उन को फिर कभी न देखोगे।
- 21 और मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया; और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई, और समुद्र को दो भाग करके जल ऐसा हटा दिया, जिससे कि उसके बीच सूखी भूमि हो गई।
- 22 तब इस्राएली समुद्र के बीच स्थल ही स्थल पर हो कर चले, और जल उनकी दाहिनी और बाई ओर दीवार का काम देता था।
- 23 तब मिस्री, अर्थात् फिरौन के सब घोड़े, रथ, और सवार उनका पीछा किए हुए समुद्र के बीच में चले गए।
- 26 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ा, कि जल मिस्रियों, और उनके रथों, और सवारों पर फिर बहने लगे।

- ²⁷ तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाया, और भोर होते होते क्या हुआ, कि समुद्र फिर ज्यों का त्यों अपने बल पर आ गया; और मिस्री उलटे भागने लगे, परन्तु यहोवा ने उन को समुद्र के बीच ही में झटक दिया।
- ³⁰ और यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों को मिस्रियों के वश से इस प्रकार छुड़ाया; और इस्राएलियों ने मिस्रियों को समुद्र के तट पर मरे पड़े हुए देखा।
- ³¹ और यहोवा ने मिस्रियों पर जो अपना पराक्रम दिखलाता था, उसको देखकर इस्राएलियों ने यहोवा का भय माना और यहोवा की और उसके दास मूसा की भी प्रतीति की॥

4. इब्रानियों 11 : 1, 24, 27, 29

- ¹ अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।
- ²⁴ विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया।
- ²⁷ विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डर कर उस ने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानों देखता हुआ दृढ़ रहा।
- ²⁹ विश्वास ही से वे लाल समुद्र के पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना चाहा, तो सब डूब मरे।

5. व्यवस्थाविवरण 34 : 10-12

- ¹⁰ और मूसा के तुल्य इस्राएल में ऐसा कोई नबी नहीं उठा, जिस से यहोवा ने आम्हने-साम्हने बातें कीं,
- ¹¹ और उसको यहोवा ने फिरौन और उसके सब कर्मचारियों के साम्हने, और उसके सारे देश में, सब चिन्ह और चमत्कार करने को भेजा था,
- ¹² और उसने सारे इस्राएलियों की दृष्टि में बलवन्त हाथ और बड़े भय के काम कर दिखाए॥

6. भजन संहिता 114 : 7

- ⁷ हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 583 : 20-25

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

रचनाकार। आत्मा; मन; बुद्धि; सभी के दैवीय सिद्धांत जो वास्तविक और अच्छे हैं; आत्म-अस्तित्व जीवन, सत्य और प्रेम; जो परिपूर्ण और शाश्वत है; पदार्थ और बुराई के विपरीत, जिसका कोई सिद्धांत नहीं है; ईश्वर, जिसने वह सब बनाया था जो स्वयं एक परमाणु या एक तत्व नहीं बना सकता था।

2. 139 : 4-7 (से;)

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा।

3. 321 : 6-8

हिब्रू लॉजिवर, भाषण की धीमी गति, लोगों को यह समझने में निराश करती है कि उसे क्या बताया जाना चाहिए।

4. 89 : 18-21

जरूरी नहीं कि मन शैक्षिक प्रक्रियाओं पर निर्भर हो। यह अपने आप में सभी सुंदरता और कविता, और उन्हें व्यक्त करने की शक्ति रखता है। आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देता है जब इंद्रियाँ चुप हो जाती हैं।

5. 583 : 5-9

इसराइल के बच्चे. आत्मा के प्रतिनिधि, न कि भौतिक इन्द्रिय के; आत्मा की संतान, जो त्रुटि, पाप और इन्द्रिय से जूझते हुए, दिव्य विज्ञान द्वारा शासित होते हैं; परमेश्वर की कल्पनाओं में से कुछ को मनुष्यों के समान देखा, जो भ्रम को दूर करते और बीमारों को चंगा करते हैं; अर्थात् मसीह की सन्तान।

6. 133 : 8-10, 15-18

मिस्र में, यह मन ही था जिसने इस्राएलियों को विपत्तियों में विश्वास करने से बचाया। जंगल में चट्टान से धाराएँ बहने लगीं, और मन्ना आकाश से गिरने लगा।... यहाँ तक कि विदेशी राष्ट्रों के बीच बंदी अवस्था में भी, ईश्वरीय सिद्धांत ने अग्नि भट्टी में और राजाओं के महलों में परमेश्वर के लोगों के लिए चमत्कार किए।

7. 134 : 31-11

एक चमत्कार भगवान के नियम को पूरा करता है, लेकिन उस कानून का उल्लंघन नहीं करता है। वर्तमान में यह तथ्य चमत्कार से अधिक रहस्यमय प्रतीत होता है। भजनहार ने गाया: "हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलटी बही? हे पहाड़ों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों की नाई, और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़- बकरियों के बच्चों की नाई उछलीं? हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के

साम्हने थरथरा" यह चमत्कार किसी विकार का परिचय नहीं देता है, लेकिन मौलिक आदेश को प्रकट करता है, भगवान के अपरिवर्तनीय कानून के विज्ञान की स्थापना। आध्यात्मिक विकास अकेले ईश्वरीय शक्ति के व्यायाम के योग्य है।

वही शक्ति जो पाप को ठीक करती है, बीमारी को भी ठीक करती है।

8. 256 : 12-25

"हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;"

शाश्वत 'मैं हूँ' भौतिक मानवता की संकीर्ण सीमाओं में न तो बंधा है और न ही संकुचित है, न ही उसे नश्वर अवधारणाओं के माध्यम से सही ढंग से समझा जा सकता है। ईश्वर का सटीक स्वरूप इस महान प्रश्न की तुलना में कम महत्व का है कि, अनन्त मन या दिव्य प्रेम क्या है?

वह कौन है जो हमारी आज्ञाकारिता की माँग करता है? वह जो, शास्त्र की भाषा में, "जो स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहने वालों के बीच अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोक कर उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है?"

अनंत प्रेम का प्रतिनिधित्व करने के लिए कोई रूप या भौतिक संयोजन पर्याप्त नहीं है।

9. 566 : 1-9

चूंकि लाल सागर के माध्यम से इज़राइल के बच्चों को विजयी रूप से निर्देशित किया गया था, इसलिए मानव भय के अंधेरे और बहते ज्वार, — क्योंकि वे जंगल से होकर निकले थे, जो मानवीय आशाओं के महान रेगिस्तान से थके हुए थे, और वादा किए गए आनन्द की आशा करते थे,— इसलिए आध्यात्मिक विचार आत्मा से अस्तित्व की भौतिक भावना से लेकर आत्मा तक, भगवान से प्रेम करने वाले उनके लिए तैयार किए गए गौरव तक, आत्मा से उनके मार्ग में सभी सही इच्छाओं का मार्गदर्शन करेगा।

10. 124 : 26 (हम)-31

हम ताकतों पर चलते हैं। उन्हें वापस ले लें, और सृजन को ढह जाना चाहिए। मानव ज्ञान उन्हें पदार्थ की ताकत कहता है; लेकिन दिव्य विज्ञान घोषित करता है कि वे पूर्ण रूप से दिव्य मन से संबंधित हैं, इस दिमाग में निहित हैं, और इसलिए उन्हें उनके सही घर और वर्गीकरण के लिए पुनर्स्थापित करता है।

11. 468 : 17 (पदार्थ)-24

पदार्थ वह है जो अनादि है और कलह और क्षय से असमर्थ है। सत्य, जीवन और प्रेम पदार्थ हैं, क्योंकि इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग होता है: "विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" आत्मा, मन, आत्मा या ईश्वर का पर्यायवाची एकमात्र वास्तविक पदार्थ है। व्यक्ति सहित आध्यात्मिक ब्रह्मांड, एक यौगिक विचार है, वह आत्मा के दिव्य पदार्थ को दर्शाता है।

12. 278 : 28-5

जिसे हम पाप, बीमारी और मृत्यु कहते हैं, वह नश्वर विश्वास है। हम सामग्री को त्रुटि के रूप में परिभाषित करते हैं, क्योंकि यह जीवन, पदार्थ और बुद्धि के विपरीत है। यदि आत्मा पर्याप्त और शाश्वत है, तो पदार्थ, उसकी मृत्यु दर के साथ, पर्याप्त नहीं हो सकता। हमारे लिए कौन सा पदार्थ होना चाहिए, — गलती से, बदलते हुए, परिवर्तनशील और नश्वर, या बेरोकटोक, अपरिवर्तनीय और अमर चीज़? एक नए नियम का लेखक स्पष्ट रूप से विश्वास का वर्णन करता है, मन का एक गुण, "आशा की गई वस्तुओं का सार" के रूप में।

13. 226 : 25-2

लंगड़े, बहरे, गूंगे, अंधे, बीमार, कामुक, पापी, मैं उन्हें अपने विश्वासों की गुलामी से और फिरौन की शैक्षिक प्रणालियों से बचाना चाहता था, जो आज भी, पहले से ही, इस्राएल के बच्चे दासत्व में हैं। मैंने अपने सामने भयानक संघर्ष, लाल सागर और जंगल देखा; लेकिन मैंने ईश्वर में विश्वास के माध्यम से, मजबूत मुक्तिदाता सत्य पर भरोसा करते हुए, मुझे ईसाई विज्ञान की भूमि में मार्गदर्शन करने के लिए दबाव डाला, जहां बेड़ियां गिरती हैं और मनुष्य के अधिकारों को पूरी तरह से जाना और स्वीकार किया जाता है।

14. 516 : 9-23

ईश्वर सभी चीजों का, उसकी अपनी समानता पर पक्षपात करता है। जीवन अस्तित्व में परिलक्षित होता है, सत्यता में सत्य, अच्छाई में ईश्वर, जो अपनी शांति और स्थायित्व प्रदान करता है। निःस्वार्थ भाव से प्यार, सुंदरता और रोशनी में नहाया हुआ। हमारे पैरों के नीचे की घास चुपचाप बहती है, "नम्र पृथ्वी का वारिस होगा।" मामूली अर्बेटस उसकी प्यारी साँस को स्वर्ग भेज देता है। महान चट्टान छाया और आश्रय देती है। चर्च-गुंबद से सूरज की रोशनी, जेल-सेल में झलकती है, बीमार-कक्ष में घूमती है, फूल को रोशन करती है, परिदृश्य को सुशोभित करती है, पृथ्वी को आशीर्वाद देती है। मनुष्य, उसकी समानता में बना, उसके पास सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाता है। भगवान के साथ सहवास और शाश्वत के रूप में आदमी और औरत हमेशा के लिए, अनंत पिता-माता भगवान की महिमा में परिलक्षित होते हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के

लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6